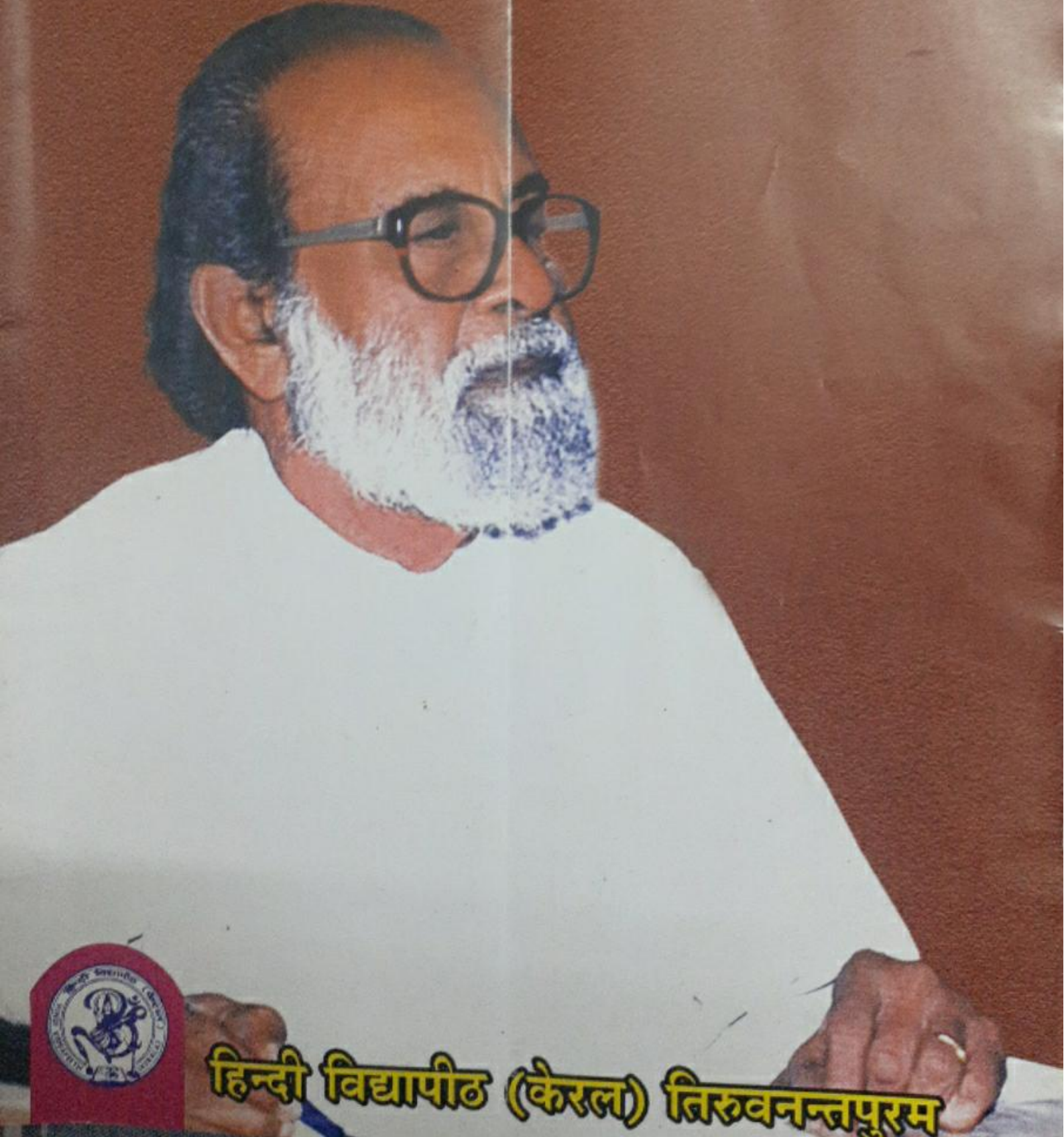


मार्च : 2020

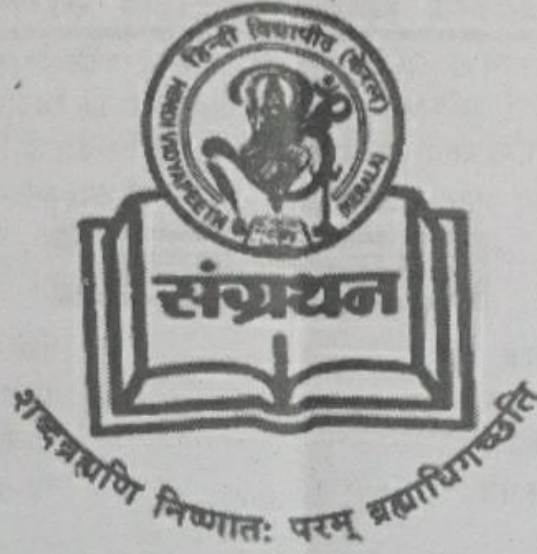
ISSN 2278 - 6880

संग्रथन



हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

ISSN 2278 - 6880



(यू.जी.सी. से अनुमोदित मासिक पत्रिका)

हिन्दी विद्यापीठ,
टी.सी. 44/2670, जगती,
तिरुवनन्तपुरम- 695014
केरल।



संस्थापक संपादक :
स्व.पी.जी.वासुदेव

संपादक:

डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन

Mob: 9447657301

msvinayachandran61@gmail.com

मुख्य संपादक :

डॉ.वी.वी.विश्वम

Mob: 9446662694

vvviswam@yahoo.in

वर्ष : ३२

अंक : 3

मार्च : 2020

मूल्य : २० रुपये मात्र

वार्षिक चन्दा : दो सौ रुपये मात्र

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

डॉ. राजेन्द्रनाथ मेहरोत्रा, हिन्दी-विश्व गौरव ग्रन्थ शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो: ९४२५९९००७७
 प्रो. (से. नि.) डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी', विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्, बंगलूर, मो: ९८८०७-८१२७८
 श्री विमलकुमार बजाज, प्रखर समाजसेवी, व्यवसायी एवं अध्यक्ष पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलोंग, मेघालय, मो: ९४३६१-११८९१
 श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र.) डॉ. उमाकुमारी. जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ. हिल्डा जोसफ
 श्री. के. जनार्दनन नायर
 प्रोफ. एन. सत्यवती
 डॉ. सुनिलकुमार. एस

प्रोफ. ए. मीरा साहिब
 डॉ. सी. जे. प्रसन्नकुमारी
 डॉ. श्रीलता. के.
 डॉ. सुमा. एस

इस अंक में....

संपादकीय: 'पद्मश्री' से सम्मानित श्रद्धेय कलमकार

आचार्य डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर....।

मन की बात (२.०) नौवीं कड़ी

गिरिराज किशोर न रहे।

राज्यपाल आये, बहार आयी

विमल बजाज, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अखिलेश की कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना

राजभाषा प्रबंधन की दिशाएँ

'किन्नर कथा' उपन्यास में किन्नरों की व्यथा

वेश्यावृत्ति के पिंजरे में अनादृत स्त्रियों का जीवन-यथार्थ

'आज बाज़ार बंद है' उपन्यास के विशेष संदर्भ में

अवधेश प्रीत की कहानियों में सांप्रदायिकता : एक सर्वेक्षण

क्षमा शर्मा की कहानियों का सौंदर्यशास्त्र

युवा मानसिकता और समकालीन हिन्दी उपन्यास

हम भी दुनिया घूमे (वैज्ञानिक भ्रमण साहित्य - धारावाहिक-११)

मूल लेखक : अरक्कल हस्सन कुट्टी, ऐ.एफ.एस. अनुवादक : डॉ. वी. वी. विश्वम्

सफ़र (कविता)

प्रश्नोत्तरी

डॉ. एम. एस. विनयचन्द्रन 5-6

श्री नरेन्द्र मोदी 7-12

प्रो. वी. डी. कृष्णन नंषियार 13-14

डॉ. आरसु 15-18

आचार्य राजेन्द्रनाथ मेहरोत्रा 18-20

डॉ. वी. के. सुब्रह्मण्यन 21-25

डॉ. हेरमन. पी. जे. 26-31

रेष्मा. के. आर. 32-35

अंजु. के. आर. 36-39

पैजा. के. 39-42

डॉ. हेमा. जी. 43-47

डॉ. शहला. के. पी. 48-51

डॉ. एस. रमा उज्जितान 52-53

जुगनू 53

मुखचित्र - पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर 54



अखिलेश

अखिलेश की कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना



डॉ. वी.के. सुब्रह्मण्यन

अखिलेश की कहानियाँ अपने समय की बदलती मानवीय संवेदनाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाली हैं। आज दुनिया में मानवीय संवेदनाएँ क्षीण हो रही हैं। मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करनेवाला तत्व वास्तव में उसमें निहित मानवीय संवेदनाएँ ही हैं। दया, ममता, करुणा, भाईचारा, प्रेम, प्रणय आदि से समृद्ध है मनुष्य का स्वत्व, इन गुणों के कारण ही मनुष्य अपने सहजीवियों और अन्य प्राणियों के प्रति रहम दिखाता है।

संवेदनाओं का मतलब अपने सहजीवियों के साथ एकात्म भाव का अनुभव करना और दिखाना है। याने प्रत्येक मनुष्य अपने सहजीवियों के भावों का अनुभव उसी प्रकार करता है जिस प्रकार अपने में वह उसका अनुभव करता

है। लेकिन मनुष्य के सांस्कृतिक विकास की लंबी यात्रा के दौरान, बीच में कहीं आधुनिकता आ गयी थी। आधुनिक बनने की अंधाधुंध दौड़ में मनुष्य अपने मूलभूत भावों को खुद नियंत्रण में नहीं रख सका। पहले वह अपने साथ घटित घटनाओं और अपने आसपास घटित घटनाओं के साथ संवेदना प्रकट कर सकता था। लेकिन अब ऐसा नहीं हो रहा है। क्योंकि आधुनिक मनुष्य के मूलभूत भावों को यंत्र ने कब्जा किया और यह व्यक्ति की संवेदनशीलता में काफ़ी परिवर्तन भी लाया जैसा कि अब सभी को यह मालूम है कि आधुनिकता का उत्पादक औद्योगिक विकास है जिसके केन्द्र में यंत्र की भूमिका रहती है। आज यंत्र से नियंत्रित हो रहा है व्यक्ति, जिसके चरित्र में यांत्रिकता आयी है। यह सबको

विदित है कि यंत्र के पास सिर्फ यांत्रिकता ही रहती है, लेकिन मनुष्य के पास 'मन' और 'हृदय' दोनों रहते हैं। आधुनिक बनने की दौड़ में यांत्रिकता का उपनिवेशन हुआ जिसने मनुष्य के हृदय पक्ष को काफ़ी दुर्बल भी बना दिया। क्योंकि यंत्र का चरित्र मनुष्य के चरित्र के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकता है। इस स्थिति में उसके साथ जो मानवीय संवेदनाएँ रहती हैं, वे धीरे-धीरे अप्रत्यक्ष हो जाएँगी। संवेदनाएँ अपने साथ रहने के कारण जो वैशिष्ट्य मनुष्य में रहता है, वह आज काफ़ी कमज़ोर हो गया है। यह भी सच है कि संवेदनाओं को मनुष्य के द्वारा अनुभव किया जा सकता है, न कि उनको व्याख्यायित किया जा सकता है। रामदरश मिश्र के अनुसार "मानवीय संवेदनाएँ सामान्यतः ऐसी होती हुई भी वैशिष्ट्य

१. हिन्दी कहानी एक अन्तरंग पहचान, डॉ.रामदरश मिश्र, पृ.सं.३१